

# डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, रहस्योद्घाटन और शास्त्र, सत्र 13, नए नियम में विशेष रहस्योद्घाटन, अवतार, पॉल, परिचय, प्रेम, धार्मिकता, बुद्धि, इब्रानियों, प्रकटकर्ता, शक्ति

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्लेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा प्रकाशितवाक्य और पवित्र शास्त्र पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 13 है, नए नियम में विशेष प्रकाशितवाक्य, अवतार, पॉल, परिचय, प्रेम, धार्मिकता, बुद्धि, इब्रानियों, प्रकटकर्ता, शक्ति। आइए प्रार्थना करें। दयालु पिता, अपने

बेटे और अपने वचन में खुद को हमारे सामने प्रकट करने के लिए धन्यवाद, जो हमें उसके बारे में बताता है। हमें सुसमाचार पढ़ने, यीशु को हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में, हमारे उदाहरण के रूप में, लेकिन साथ ही एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जानने में मदद करें जो आपको पहले कभी नहीं प्रकट करता है। हमें और हमारे परिवारों को आशीर्वाद दें, हम प्रार्थना करते हैं, यीशु के पवित्र नाम में। आमीन।

हमने जॉन और पॉल में अवतार में विशेष प्रकाशितवाक्य को देखा है, मेरा मतलब जॉन में है, और अब हम पॉल और इब्रानियों को लिखे पत्र में ऐसा करना चाहते हैं। कुलुस्सियों 1:15 हमें आगे बढ़ने में मदद करेगा क्योंकि यह परमेश्वर के पुत्र को संदर्भित करता है।

वह अदृश्य परमेश्वर की छवि है, सारी सृष्टि में ज्येष्ठ है। क्योंकि उसी के द्वारा स्वर्ग की हो या पृथ्वी की, दृश्य हो या अदृश्य, सिंहासन हो या प्रभुता हो या शासक हो या अधिकारी, सारी चीज़ें उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं, कुलुस्सियों 1:17। और वही सब चीज़ों में प्रथम है, और सब चीज़ें उसी में स्थिर रहती हैं।

और वह शरीर, अर्थात् कलीसिया का सिर है। वह शुरुआत है, मरे हुए में से ज्येष्ठ है, और सब बातों में वह प्रमुख हो सकता है। क्योंकि परमेश्वर की सारी परिपूर्णता उसी में वास करने को प्रसन्न हुई, और उसके क्रूस के लहू के द्वारा शांति करके, चाहे वह पृथ्वी पर हो या स्वर्ग में, सब वस्तुओं को उसके द्वारा अपने साथ मिला लेने की इच्छा हुई।

सबसे पहले शब्द ही इस समय हमारी सबसे बड़ी चिंता हैं। वह ईश्वर का प्रतीक है, उसकी छवि है, अदृश्य है। वह अदृश्य ईश्वर की छवि है।

यदि कोई ईश्वर को जानना चाहता है, यदि कोई ईश्वर के बारे में सीखना चाहता है, तो उसे ईश्वर के देहधारी पुत्र के चेहरे को देखना चाहिए, क्योंकि वह अदृश्य ईश्वर का बहुत ही दृश्यमान प्रतिनिधित्व है। वह अदृश्य ईश्वर है जो देहधारण में, पुत्र द्वारा सच्ची मानवता को अपने में समाहित करने में, बिल्कुल दृश्यमान हो गया है। वह ईश्वर की छवि है।

और इस तरह, वह ईश्वर की छवि बनाता है। वह ईश्वर को प्रकट करता है। वह ईश्वर के कई गुणों को प्रकट करता है।

हम उनमें से कुछ पर ही नज़र डालेंगे। वह परमेश्वर के प्रेम को प्रकट करता है, रोमियों 5 :6 से 8 तक। यह एक अद्भुत आश्वासन वाला अंश है। पौलुस आश्वासन को तीन बातों पर आधारित करता है।

बेहतर तरीके से कहा जाए तो, परमेश्वर हमें तीन तरीकों से आश्चस्त करता है। वह अपने वचन में वादा करता है कि वह उन लोगों को बचाता रहेगा जिन्हें वह बचाता है। वह उन्हें अपने दिलों में काम करने के लिए अपनी आत्मा देता है, ताकि उन्हें आश्चस्त कर सके।

और वह उनके जीवन में, हमारे जीवन में, हमें पाप के प्रति दोषी ठहराकर, हमें धार्मिकता में ले जाकर, हमारे विश्वास को उत्तेजित करके, हमारे जीवन में आत्मा के फल उत्पन्न करके हमें आश्चस्त करने के लिए कार्य करता है। रोमियों 5:1 से 11 में, परमेश्वर ने हमें आश्चस्त करने के लिए इन तीन तरीकों को एक साथ लाया है। परमेश्वर हमें आश्चस्त करता है, मैं उन्हें उल्टा करूँगा।

परमेश्वर हमारे जीवन में काम करके हमें आश्चस्त करता है। हम इसे पद 3 में देखते हैं। अब हम न केवल परमेश्वर के वचन और वादों के कारण परमेश्वर की महिमा की आशा में आनन्दित होते हैं, बल्कि केवल इतना ही नहीं, रोमियों 5:3, बल्कि हम अपने कष्टों में भी आनन्दित होते हैं, यह जानते हुए कि कष्ट सहनशीलता उत्पन्न करता है, और सहनशीलता चरित्र उत्पन्न करती है, और चरित्र आशा उत्पन्न करता है। और आशा हमें लज्जित नहीं करती क्योंकि परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में उंडेला गया है।

मैं मदद नहीं कर सकता। मैं यहीं नहीं रुक सकता। पवित्र आत्मा के माध्यम से जो हमें दिया गया है, एक और तरीका है जिससे परमेश्वर हमें आश्चस्त करता है, हमारे हृदय में आत्मा के द्वारा। लेकिन पहला तरीका जो मैं दिखाना चाहता हूँ वह तीन तरीकों में से तीसरा है, वचन के द्वारा, आत्मा के द्वारा, हमारे जीवन को बदलकर, हमारे जीवन को बदलकर।

हम न केवल परमेश्वर की महिमा की आशा में आनन्दित होते हैं, बल्कि इसलिए भी कि वह हमारे जीवन में कैसे कार्य करता है। वह कहते हैं कि यह संभव है; वास्तव में, वह इसे सामान्य ईसाई जीवन के रूप में देखते हैं कि दुखों में आनन्दित होना चाहिए क्योंकि मसीह के साथ एकता में उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान के साथ एकता शामिल है। उनकी मृत्यु के साथ एकता में, अन्य बातों के अलावा, अभी दुख उठाना भी शामिल है।

उसके पुनरुत्थान के साथ एकता में बाद में महिमा शामिल है। हम अपने दुखों में आनन्दित होते हैं, यह जानते हुए कि दुख का सही तरीके से जवाब देने से धीरज पैदा होता है। सभी दुख धीरज पैदा नहीं करते।

लेकिन परमेश्वर के लोग जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कष्ट उठाते हैं, परमेश्वर की ओर देखते हैं, परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, परमेश्वर की आत्मा पर निर्भर रहते हैं, वे स्थिरता, दृढ़ता, धीरज

और दृढ़ता सीखते हैं क्योंकि वे बार-बार अपने कष्टों में विश्वास के साथ, प्रभु पर भरोसा रखते हुए प्रतिक्रिया करते हैं। कष्ट सहनशीलता पैदा करता है। सहनशीलता चरित्र पैदा करती है।

यदि कोई विश्वासी बार-बार दुखों के प्रति ईश्वरीय तरीके से प्रतिक्रिया करता है, तो वह धीरज या स्थिरता सीखता है, और अंततः, वह स्थिरता उसे एक स्थिर या विश्वसनीय व्यक्ति बनाती है। पौलुस के शब्दों के पीछे यही तर्क है। हम अपने दुखों में आनन्दित होते हैं, यह जानते हुए कि दुखों का सही तरीके से जवाब देने से धीरज पैदा होता है।

और अगर हम लंबे समय तक टिके रहें, तो धीरज से चरित्र का निर्माण होता है। और हमें यहाँ उनके विचारों को थोड़ा समझने की कोशिश करनी चाहिए, कुछ अनुमान के साथ, लेकिन मुझे नहीं लगता कि यह बहुत कठिन है। और चरित्र से आशा पैदा होती है।

आप देखिए, मैं इस भाग को समझता हूँ। दुख, सही मायने में, धीरज लाता है। प्रभु में पर्याप्त समय तक धीरज रखने से दृढ़ चरित्र प्राप्त होता है।

मैं उस हिस्से को समझता हूँ। लेकिन इससे आशा कैसे पैदा होती है? पॉल का विचार यह है कि डगलस मूरोमियों पर अपनी टिप्पणी में मुझसे सहमत हैं, कि हमारे जीवन में अभी परमेश्वर को काम करते हुए देखना भविष्य के लिए आशा पैदा करता है जिसे हम नहीं देख सकते। परमेश्वर को अभी काम करते हुए देखना भविष्य के लिए हमारी आशा को बढ़ाता है जिसे हम नहीं देख सकते।

हम अपने दुखों में भी आनन्दित होते हैं, एक अर्थ में, क्योंकि दुख सहनशीलता उत्पन्न करता है, सहनशीलता चरित्र उत्पन्न करती है, और चरित्र आशा उत्पन्न करता है। जो हम देख सकते हैं उसके लिए परमेश्वर पर भरोसा करने से हमारी आशा बढ़ती है कि जो हम नहीं देख सकते उसके लिए भी वह अपने वादों को पूरा करेगा। यही भविष्य की महिमा है।

और यह आशा हमें शर्मिंदा नहीं करती, जैसा कि कुछ आशाएँ करती हैं, झूठी आशाएँ, क्योंकि परमेश्वर का प्रेम पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे हृदयों में डाला गया है जो हमें दिया गया है। परमेश्वर हमें तीन तरीकों से आश्चस्त करता है, अपने वचन से, अपनी आत्मा से, हमारे जीवन को बदलकर, रोमियों 5:3 और 4 में उसे हमारे जीवन में काम करते हुए देखकर, अब हम रोमियों 5:5 में देखते हैं, दूसरा तरीका जिससे वह हमें आश्चस्त करता है, टेक्स्टस क्लासिकस रोमियों 8, 16 है, जो कहता है, आत्मा स्वयं हमारी आत्मा के साथ गवाही देती है कि हम परमेश्वर की संतान हैं। आत्मा स्वयं, पवित्र आत्मा, हमारी मानवीय आत्मा के साथ गवाही देती है कि हम परमेश्वर की संतान हैं।

यहाँ, परमेश्वर, पिता, हमें अपने प्रेम के बारे में बताता है। वह आत्मा के द्वारा आंतरिक रूप से हम तक अपना प्रेम पहुँचाता है। वह उद्धार में हमें पवित्र आत्मा देकर हमारे हृदयों में अपना प्रेम उंडेलता है।

लेकिन एक तीसरा रास्ता भी है, और वास्तव में, सबसे बुनियादी रास्ता, सबसे महत्वपूर्ण रास्ता। ओह, भगवान हमें उद्धार के तीन रास्ते बताते हैं। प्रभु की स्तुति हो।

हम जितना भी आश्वासन पा सकते हैं, उसे स्वीकार करेंगे। इसलिए, जब वह हमारे जीवन में काम करता है, तो हम आनन्दित होते हैं, जिसमें वह भी शामिल है जब वह हमें पाप के लिए दोषी ठहराता है। हम आत्मा की आंतरिक गवाही में आनन्दित होते हैं।

लेकिन हम इनमें से किसी भी चीज़ को शब्द से अलग नहीं करते। और वास्तव में, शब्द सर्वोपरि है, क्योंकि यह अन्य दो की तुलना में अधिक वस्तुनिष्ठ है। अगर कोई व्यक्ति बहुत बीमार हो जाता है या बहुत निराश हो जाता है या कुछ भयानक परिस्थितियों में होता है, तो हो सकता है कि वह आत्मा को महसूस न करे।

और कई बार, हर विश्वासी अपने प्यार से लगभग निराश हो जाता है। प्यारे प्रभु, मेरे अंदर क्या चल रहा है? क्या मैं एक ईसाई व्यक्ति भी हूँ, जो इन विचारों का शुक्रिया अदा कर रहा हूँ, अपने मुँह से इस आग को बाहर आने दे रहा हूँ, इस तरह के पाप कर रहा हूँ? यह सामान्य ईसाई अनुभव नहीं है, लेकिन शायद हममें से अधिकांश लोग इससे संबंधित हो सकते हैं। लेकिन परमेश्वर हमारे जीवन में काम करके हमें आश्चस्त करता है।

और मैं, 1 यूहन्ना 1:8 से 10, जिसमें हमें पाप के प्रति दोषी ठहराना भी शामिल है। यह परमेश्वर का एक अच्छा काम है। और वह अपनी आत्मा के द्वारा हमारे लिए आंतरिक रूप से गवाही देता है।

लेकिन इन दोनों से ज़्यादा महत्वपूर्ण और इन दोनों के लिए बुनियादी बात है, अपने लोगों को बचाने के लिए उनके वचन में उनके वादे। और बचाने और बनाए रखने के ये वादे हमारे भरोसे को मज़बूत करते हैं। ठीक है? आयत 6 से 8 उन वादों का एक उदाहरण हैं।

वास्तव में, आयत 1 और 2 एक ही हैं। लेकिन रोमियों 6 से 8 की पूरी व्याख्या न हो, इसलिए जब हम कमज़ोर थे, तो मसीह ने सही समय पर अधर्मियों के लिए अपनी जान दे दी। क्योंकि कोई धर्मी व्यक्ति के लिए मरना मुश्किल है।

हालांकि शायद एक अच्छा इंसान मरने की हिम्मत भी कर सकता है। यह कोई नई बात नहीं है। यह असामान्य बात है।

लेकिन खास तौर पर अपने देश की सेवा के संदर्भ में, हम किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में जानते हैं जो अपनी जान दे देता है, खुद को हथगोले पर फेंक देता है, विस्फोट को झेलता है, खुद को मार डालता है, और अपने साथियों की खातिर अपनी जान दे देता है। लेकिन परमेश्वर ने हमारे लिए अपने प्रेम को इस तरह चुना कि जब हम अभी भी पापी थे, तब मसीह हमारे लिए मर गया। यह उल्लेखनीय है।

परमेश्वर हमें सबसे बढ़िया तरीके से आश्चस्त करता है, वह है उसका वचन। जब हम पापी थे, तब उसने हमसे प्रेम किया। उसने हमें बचाया।

वह निश्चित रूप से हमें बचाए रखेगा। वह हमें बचाए रखने का वादा करता है। परमेश्वर के वचन में बहुत बड़ा आश्वासन है।

वास्तव में, आगे आने वाली आयतें मूल रूप से कहती हैं, यदि जब हम दोषी ठहराए गए थे, तब परमेश्वर ने हमें धर्मी ठहराया, अब जब उसने हमें धर्मी ठहराया है, तो वह हमें बचाए रखेगा। आयत 9 और 10 मूल रूप से कहती हैं कि जब हम शत्रु थे, तब परमेश्वर ने हमें अपने साथ मिला लिया, अब जब उसने हमें मिला लिया है, तो वह हमें बचाए रखेगा। वह हमें अपने क्रोध से बचाएगा।

आप देखिए, आश्वासन के इस अद्भुत विवरण में, परमेश्वर अपने पुत्र के माध्यम से हमारे लिए अपने प्रेम को प्रकट करता है। ओह, यह कितना अद्भुत प्रेम है। मसीह अधर्मियों, कमजोरों, पापियों के लिए मरा, ताकि हम उद्धार पा सकें।

अवतार परमेश्वर के प्रेम को पहले कभी नहीं देखा गया था। 1 यूहन्ना अध्याय 4 में कहता है कि यह प्रेम है, न कि हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं, बल्कि यह कि उसने हमसे प्रेम किया और अपने पुत्र को हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिए दे दिया। यह हमें रोमियों 3, 25, 26 तक ले जाता है, जो कि मुख्य स्थान है जहाँ हम नए नियम में प्रायश्चित्त पाते हैं।

यह चार बार आता है, लेकिन यह मुख्य समय है। यह इसका मुख्य विवरण है। यह 1 यूहन्ना 4 में दो बार पाया जाता है, यह इब्रानियों 2:17 में पाया जाता है, लेकिन मुख्य स्थान रोमियों 3:25 और 26 है।

इन व्याख्यानों में मैंने जो पहले कहा था, उसी को आगे बढ़ाते हुए, रोमियों 1:16 और 17 में, पौलुस ने रोमियों के लिए अपना विषयगत वक्तव्य दिया। विषय है परमेश्वर की उद्धारकारी धार्मिकता का प्रकाशन। लेकिन 1:18 में उस विषय का तुरंत अनुसरण नहीं किया गया है।

ओह, यह करता है, लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से, क्योंकि यह किसी और चीज़ के प्रकाशन की बात करता है, मनुष्य की अधर्मी और अधर्मी प्रवृत्ति के विरुद्ध स्वर्ग से परमेश्वर का क्रोध। वह विषय, परमेश्वर के क्रोध का प्रकाशन, 1:18 से 3:20 तक एक सामयिक सारांश है। 3:21 में, परमेश्वर के सामने दुनिया को पर्याप्त रूप से नम्र करने और यह दिखाने के बाद कि प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर के क्रोध के अधीन एक पापी है जिसे उद्धार के लिए परमेश्वर की कृपा की आवश्यकता है। 3:21 में, वह 1:16 और 17 के विषय पर लौटता है और कहता है, लेकिन अब परमेश्वर की धार्मिकता व्यवस्था से अलग प्रकट हुई है, हालाँकि व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं द्वारा इसकी गवाही दी गई है।

मसीह में विश्वास के द्वारा परमेश्वर की धार्मिकता उन सभी के लिए है जो विश्वास करते हैं। और पौलुस इस धार्मिकता, इस बचाने वाली धार्मिकता को आगे की आयतों में समझाता है। कोई भेद नहीं है, क्योंकि सभी ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।

और वे मसीह यीशु में छुटकारे के द्वारा एक उपहार के रूप में उसके अनुग्रह से धर्मी ठहराए जाते हैं। इन आयतों में प्रायश्चित्त की दो तस्वीरें हैं। पहली तस्वीर है छुटकारे की।

पॉल हमें यहाँ अधिक विवरण नहीं देता है, लेकिन संक्षेप में कहें तो, छुटकारे में बंधन की वह स्थिति शामिल है जिसमें से परमेश्वर हमें लहू की खरीद कीमत, परमेश्वर के पुत्र की बलिदानी मृत्यु से खरीदता है। और इसका परिणाम स्वतंत्रता की एक परिणामी स्थिति है। लियोन मॉरिस ने क्रूस पर अपने प्रेरितिक उपदेश में इसे अच्छी तरह से दर्शाया है।

छुटकारे में तीन चरण शामिल हैं। बंधन, आध्यात्मिक बंधन, फिरौती की कीमत, मसीह की मृत्यु, परिणामस्वरूप परमेश्वर के बच्चों की स्वतंत्रता। जॉन स्टॉट ने मसीह के क्रूस में एक चौथा विषय जोड़ा है, और वह यह है कि हम उसके हैं जिसने हमें खरीदा है।

हम अपने नहीं हैं। हमें कीमत देकर खरीदा गया है, जैसा कि हम 1 कुरिन्थियों 6 के अंत में देखते हैं। इसलिए, पौलुस छुटकारे की खोज नहीं करता, वह बस इसका उल्लेख करता है। इसके बजाय, वह एक और विषय की खोज करता है, और वह है प्रायश्चित, और वह है प्रायश्चित।

मसीह यीशु, रोमियों 3:24, जिसे परमेश्वर ने अपने लहू के द्वारा प्रायश्चित के रूप में प्रस्तुत किया, ताकि विश्वास के द्वारा ग्रहण किया जाए। यह परमेश्वर की धार्मिकता को दर्शाने के लिए था, क्योंकि उसने अपने ईश्वरीय सहनशीलता में पिछले पापों को अनदेखा कर दिया था। यह वर्तमान समय में उसकी धार्मिकता को दर्शाने के लिए था ताकि वह न्यायी हो सके और यीशु पर विश्वास करने वाले को न्यायी ठहरा सके।

लंबी कहानी को संक्षेप में कहें तो, पौलुस सिखाता है कि मसीह का क्रूस परमेश्वर के प्रेम को पहले से कहीं अधिक प्रकट करता है। रोमियों 5 :6-8, परमेश्वर इस तरह हमारे लिए अपने प्रेम को प्रदर्शित करता है। जब हम पापी ही थे, तब मसीह हमारे लिए मरा।

लेकिन मसीह का क्रूस भी परमेश्वर के न्याय को दर्शाता है, और हम इसे इन प्रायश्चित ग्रंथों में पाते हैं, विशेष रूप से इस एक में, जो कि प्रमुख है। रोमियों 3 के श्लोक 25 में पौलुस कहता है कि परमेश्वर ने अपनी दिव्य सहनशीलता में पिछले पापों को क्षमा कर दिया। अर्थात्, बलिदान प्रणाली के माध्यम से, सच्चे उपासकों को पशु की मृत्यु के माध्यम से परमेश्वर द्वारा क्षमा किया गया था, और उनका विश्वास था कि परमेश्वर उस बलिदान के आधार पर क्षमा करेगा, लेकिन बैल और बकरियों का खून, इब्रानियों हमें बताता है, वास्तव में पाप के लिए अंतिम प्रायश्चित नहीं करता है। और इसलिए परमेश्वर, उन प्रत्येक बलिदान के साथ, मानो अपने लिए IOU लिख रहा था।

उसे मामलों को निपटाने की ज़रूरत थी, उसे अपने न्याय से निपटने की ज़रूरत थी, और वास्तव में, यही उसने मसीह के क्रूस पर किया था, और इसे प्रायश्चित कहा जाता है। परमेश्वर का न्याय मसीह के कार्य में संतुष्ट था, जिसने परमेश्वर, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के क्रोध को सहन किया, खुद को ईश्वर-मनुष्य के रूप में, नरक की पीड़ाओं को सहते हुए, क्योंकि वह एक सीमित समय में परमेश्वर और मनुष्य था, वह उन सभी को बचाने के लिए शाश्वत दंड के बराबर वास्तविक पीड़ा सह सकता था जो उस पर विश्वास करेंगे। खोए हुए लोग कभी-कभी सोचते हैं, हुह, भगवान बस सभी को बचा लेंगे। वह प्रेम का परमेश्वर है।

अगर परमेश्वर सभी को नहीं बचाता, तो उसमें कुछ गड़बड़ होगी। यह परमेश्वर के चरित्र की पूरी तरह से गलतफहमी है क्योंकि बाइबल की समस्या यह नहीं है कि प्रेम का परमेश्वर किसी को कैसे दोषी ठहराता है; अगर हम बाइबल के तीन अध्याय या रोमियों के तीन अध्याय पढ़ते हैं, तो वह सभी को दोषी ठहरा सकता है और हमेशा की तरह प्रेमपूर्ण हो सकता है। समस्या यह है कि वह अपना न्याय कैसे बनाए रख सकता है और किसी को कैसे बचा सकता है, चाहे वह आदम और हव्वा हों या यहूदी और अन्यजाति, जिनके बारे में पॉल ने कहा है कि वे परमेश्वर के क्रोध के अधीन हैं, रोमियों के 3:18, 1:18 से 3:20 तक।

इसका उत्तर यह है कि मसीह का क्रूस न केवल परमेश्वर के प्रेम का सबसे बड़ा रहस्योद्घाटन है, बल्कि यह परमेश्वर के न्याय का भी सबसे बड़ा रहस्योद्घाटन है क्योंकि मसीह के क्रूस ने परमेश्वर को अपनी नैतिक अखंडता, अपने न्याय को बनाए रखने और यीशु में विश्वास करने वाले किसी भी व्यक्ति को न्यायोचित रूप से बचाने में सक्षम बनाया। क्रूस वर्तमान समय में परमेश्वर की धार्मिकता को दिखाने के लिए था, पद 26, ताकि वह न्यायी हो और यीशु में विश्वास करने वाले को न्यायोचित ठहराए। आश्चर्यजनक रूप से, चमत्कारिक रूप से, परमेश्वर पापियों को बचाता है और उद्धार के अपने मानक को कम नहीं करता है क्योंकि मसीह उस मानक को पूरा करता है।

उनकी परिपूर्ण धार्मिकता हमारे आध्यात्मिक बैंक खातों में जोड़ी जाती है, 2 कुरिन्थियों 5:21, और हमारे पाप उनके लिए जोड़े जाते हैं जिन्होंने हमसे प्रेम किया और हमारे लिए खुद को दे दिया। न केवल मसीह, अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान में, परमेश्वर के प्रेम को प्रकट करता है। इसलिए अवतार रहस्योद्घाटन है, यह वास्तव में विशेष रहस्योद्घाटन है, रोमियों 5.6-8, न केवल मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान परमेश्वर के न्याय को प्रकट करता है, अवतार वास्तव में विशेष रहस्योद्घाटन है, रोमियों 3:25-26, लेकिन अवतार और मसीह का व्यक्तित्व और कार्य जो इसके बाद होता है, परमेश्वर की बुद्धि को एक उत्कृष्ट तरीके से प्रकट करता है, इफिसियों 1:7-10। पॉल लिखते हैं, और यह सब ध्यान देने योग्य है, लेकिन हम हर पद को नहीं देख सकते हैं। पौलुस परमेश्वर के महिमामय अनुग्रह की प्रशंसा की बात करता है, जिसके साथ उसने हमें अपने प्रिय में आशीर्वाद दिया है, परमेश्वर के पुत्र का संदर्भ, उसके द्वारा हमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा मिला है, वह उद्धार है जिसके बारे में पौलुस ने रोमियों 3 में बात की थी, प्रायश्चित्त से ठीक पहले, हमारे अपराधों की क्षमा, उसके अनुग्रह के धन के अनुसार, जिसे उसने सभी ज्ञान और अंतर्दृष्टि में हम पर उदारता से उंडेला, हमें उसकी इच्छा का रहस्य बताया, उसके उद्देश्य के अनुसार, जिसे उसने मसीह में, समय की परिपूर्णता के लिए एक योजना के रूप में निर्धारित किया, ताकि सभी चीजों को उसमें एकजुट किया जा सके, स्वर्ग की चीजें और पृथ्वी की चीजें। यह एक उल्लेखनीय कथन है कि क्रूस न केवल परमेश्वर के प्रेम और न्याय को प्रकट करता है, बल्कि अपनी योजना को पूरा करने में परमेश्वर की विलक्षण बुद्धि को भी प्रकट करता है।

अब, यह योजना पुराने नियम में थी; जैसा कि रोमियों ने हमें बताया है, अंत के निकट, इसमें बिल्कुल कमी नहीं है। रोमियों 15 हमें बताता है, क्षमा करें, रोमियों 16, कि वह जो तुम्हें मजबूत करने में सक्षम है, रोमियों में अंतिम दो छंद, मेरे सुसमाचार और यीशु मसीह के उपदेश के अनुसार, रहस्य के रहस्योद्घाटन के अनुसार, यहाँ फिर से वह विचार है, जिसे लंबे समय तक गुप्त रखा गया था, लेकिन अब इसका खुलासा किया गया है, और भविष्यवाणी के लेखों के माध्यम से, देखें कि यह लेखन में था, यह केवल तब तक प्रकट नहीं हुआ जब तक कि पिन्तेकुस्त

पर आत्मा को नहीं डाला गया जब तक कि मसीह नहीं आया, और फिर आत्मा नएपन और शक्ति में आया, लेकिन अब इसका खुलासा किया गया है, और भविष्यवाणी के लेखों के माध्यम से, सभी राष्ट्रों को ज्ञात किया गया है, शाश्वत परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार, विश्वास की आज्ञाकारिता लाने के लिए, एकमात्र बुद्धिमान परमेश्वर के माध्यम से, यीशु मसीह के माध्यम से, हमेशा के लिए महिमा हो, आमीन।

पॉल रहस्य की बात करता है, और यह केवल नए नियम के समय में, मसीह और आत्मा में प्रकट होता है, लेकिन यह भविष्यवाणी लेखन में है। इसे बस उजागर करने की आवश्यकता थी; इसे प्रकट करने की आवश्यकता थी, और यही हम बात कर रहे हैं: परमेश्वर के पुत्र के अवतार में विशेष रहस्योद्घाटन। पॉल इफिसियों 1 में इस रहस्य के बारे में बात करता है, मसीह के छुटकारे के खून में, हिंसक मृत्यु में, हमें क्षमा मिलती है, यह परमेश्वर के अनुग्रह के धन के अनुसार है, वह अनुग्रह जो परमेश्वर ने हम पर, सभी ज्ञान और अंतर्दृष्टि में, अपनी इच्छा के रहस्य को हमें ज्ञात करते हुए, मसीह के शरीर में यहूदियों और अन्यजातियों को शामिल करना है, उनके उद्देश्य के अनुसार, परमेश्वर की इच्छा, परमेश्वर का उद्देश्य, परमेश्वर का रहस्य, मसीह में उन चीजों को प्रकट करना उनकी बुद्धि है, और वह अपने उद्देश्य के अनुसार, जो उन्होंने मसीह में निर्धारित किया है, समय की परिपूर्णता के लिए एक योजना के रूप में, योजना शब्द का उपयोग करता है, वह योजना क्या है? सभी चीजों को, स्वर्ग की चीजों को, और पृथ्वी की चीजों को, उसमें एकीकृत करने के लिए, यह परमेश्वर की योजना थी, पुराने नियम के भविष्यसूचक लेखों में, लेकिन नए नियम में पिन्तेकुस्त की आत्मा के द्वारा पूर्ण रूप से प्रकट हुई, कि क्रूस पर चढ़ाए गए, जी उठे, स्वर्गारोहित, महिमावान मसीह को उंडेला गया, ताकि न केवल यह दिखाया जा सके कि परमेश्वर यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा व्यक्तियों को बचाएगा, न केवल वह यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा कलीसिया को बचाएगा, बल्कि यह कि वह यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा पतित सृष्टि को पुनर्स्थापित करेगा।

हम मुड़ने नहीं जा रहे हैं, लेकिन रोमियों 8 में, यह छुटकारे की तस्वीर के अंतर्गत है; विश्वासियों का छुटकारे सृष्टि के छुटकारे के वृहद जगत का सूक्ष्म जगत है, जो छुटकारे की लालसा करता है, और यहाँ, विश्वासियों का मेल-मिलाप, यहाँ तक कि इफिसुस के लोगों का भी, स्वर्ग और पृथ्वी के मेल-मिलाप के वृहद जगत का सूक्ष्म जगत है, जो मसीह के कार्य के अनुसार है, यह कैसा कार्य था। इसने न केवल पुराने नियम के सभी बलिदानों को वैध बनाया। हम यह नहीं कह रहे हैं कि हर कोई बचा लिया गया जिसने बलिदान दिया, जो एक बलिदान लाया, लेकिन वे लोग जो ईमानदारी से यहोवा के याजकों के लिए एक बलिदान लाए, उसके पैटर्न का पालन करते हुए, बच गए, क्योंकि मसीह की मृत्यु, इब्रानियों 9.15, ने उन बलिदानों को वैध बना दिया। परमेश्वर ने उनके माध्यम से भी क्षमा लाई,

लेकिन परमेश्वर की योजना बचाने, छुड़ाने, मेल-मिलाप करने, सृष्टि का नवीनीकरण करने की भी थी। बाइबल स्वर्ग और पृथ्वी के निर्माण से शुरू होती है। यह नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के साथ समाप्त होती है, और यह कैसे होता है यह परमेश्वर के पुत्र की मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से होता है, मसीह का कार्य जितना अद्भुत है।

न केवल यूहन्ना बल्कि पौलुस भी अपने पुत्र के अवतार में परमेश्वर के विशेष रहस्योद्घाटन की गवाही देता है। हम इब्रानियों की एक झलक देखेंगे, जो भी यही करता है। इब्रानियों 1 परमेश्वर के वचन का एक शानदार हिस्सा है।

इब्रानियों एक अद्भुत पुस्तक है। यह साहित्यिक और धार्मिक उत्कृष्ट कृति है, और मैं कह सकता हूँ कि यह धार्मिक उत्कृष्ट कृति भी है। मैं मसीह, भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा के पदों को दिखाने के लिए इब्रानियों 1 से बेहतर कोई जगह नहीं जानता। इब्रानियों 1:2, भविष्यद्वक्ता।

इब्रानियों 1:3, याजक। इब्रानियों 1 कुल मिलाकर परमेश्वर के पुत्र के राज्याभिषेक के बारे में है, जो अपनी मृत्यु, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बाद, स्वर्ग में महिमा के परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठ गया। यह उसका सत्र है, उसका बैठना।

यह इसी बारे में है, और जब यह इस बारे में बात करता है, तो यह तीन पदों, भविष्यद्वक्ता, पुजारी और राजा, पुराने नियम के ऐतिहासिक पदों को बताता है जो प्रतीक थे, भविष्यवाणियाँ की गईं, कभी-कभी अयोग्य लोगों द्वारा कब्जा कर लिया गया, लेकिन फिर भी, परमेश्वर ने भविष्यवाणी की कि एक आएगा, और वह भविष्यद्वक्ता, पुजारी और राजा के पदों को एक व्यक्ति में जोड़ देगा, यहाँ तक कि उसके प्यारे बेटे में भी। लेकिन इब्रानियों 1 के बारे में जो संदर्भ सामने आ रहा है, उसके संदर्भ में पहली बात पुराने नियम के रहस्योद्घाटन की तुलना में नए नियम के रहस्योद्घाटन की श्रेष्ठता है क्योंकि नए नियम का रहस्योद्घाटन भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से नहीं, बल्कि पुत्र के माध्यम से हुआ। वास्तव में, स्वर्गदूतों के संदर्भ, जो इब्रानियों 1 में भविष्यद्वक्ताओं की तुलना में बहुत अधिक हैं, स्वर्गदूतों के संदर्भ भविष्यद्वक्ताओं के संदर्भों के साथ चलते हैं, जैसा कि हम इब्रानियों 2:2 में देखते हैं जहाँ यह स्वर्गदूतों द्वारा घोषित संदेश की बात करता है।

यही नियम है, जैसा कि पॉल ने गलातियों 3 में कहा है, जैसा कि प्रेरितों के काम 7 में दो बार, पतरस कहता है, मैं इन उद्धरणों को बिना जाने कि मैं वास्तव में कहाँ जा रहा हूँ, गलातियों 3:19 में दोहराता रहता हूँ। दूसरे शब्दों में, इब्रानियों 1 का संदेश है कि पुत्र, नए नियम के रहस्योद्घाटन के मध्यस्थ के रूप में, पुराने नियम के रहस्योद्घाटन के मध्यस्थों, भविष्यद्वक्ताओं और स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ है। एक बार फिर, 2:2 विशेष रूप से स्वर्गदूतों द्वारा घोषित संदेश के बारे में बात करता है।

गलातियों 3:19 से पता चलता है कि यह मूसा का कानून है। व्यवस्थाविवरण में व्यवस्था दिए जाने के समय पहाड़ पर कुछ हज़ारों लोग मौजूद थे। और प्रेरितों के काम 7 में दो बार, मैं उन संदर्भों को नीचे नहीं डालने जा रहा हूँ।

पतरस स्वर्गदूतों के बारे में बात करता है, स्वर्गदूतों के माध्यम से व्यवस्था दी जाती है। इस प्रकार यीशु प्रकटकर्ता है। फिर से, अवतार परमेश्वर को पहले से कहीं अधिक प्रकट करता है।

वास्तव में, परमेश्वर की महिमा की चमक और उसके स्वभाव की सटीक छाप के रूप में उसकी सुंदर छवियाँ। वास्तव में, वे तीनों तीन सत्य बताते हैं, लेकिन संदर्भ में दोनों का प्रमुख सत्य यह है

कि यीशु परमेश्वर का महान प्रकटकर्ता है। जब यह कहा जाता है कि वह परमेश्वर की महिमा की चमक है, तो यह आकाश में सूर्य के बारे में बात कर रहा है, और यह सूर्य की किरणों को उगलते हुए, या इस मामले में, एक किरण, एक चमक, एक दीप्ति या चमकते हुए चित्रित कर रहा है।

ईश्वर के पुत्र को तेज कहा जाता है, सूर्य की चमक, जो ईश्वर की महिमा है। यह क्या दर्शाता है? तीन बातें। किरण अंतरिक्ष में विस्तारित सूर्य का हिस्सा है।

यह मसीह के ईश्वरत्व को दर्शाता है। वह ईश्वर की चमक है, क्योंकि वह ईश्वर का अवतार है। सूर्य और किरण के बीच भी अंतर है।

सूर्य पूरी तरह से लम्बा नहीं है, लेकिन किरणें लम्बी हैं। इसलिए, यदि आप चाहें तो पिता और पुत्र के बीच एक अंतर है, लेकिन अधिकतर संदर्भ में, चमक ही अदृश्य सूर्य को अदृश्य बनाती है। यदि आप इसे घूरते हैं, तो आप उस अर्थ में अंधे हो जाते हैं, हमारी आँखों के लिए अदृश्य।

वह परमेश्वर का पुत्र है, जो अदृश्य पिता को प्रकट करता है। वह परमेश्वर की महिमा की चमक है। कुलुस्सियों 1:15 का बिल्कुल वही अर्थ।

अदृश्य परमेश्वर की छवि का वही अर्थ है जो यूहन्ना 1 में है। परमेश्वर को, उस अद्वितीय परमेश्वर को जो पिता की गोद में है, जो पिता की ओर है, किसी मनुष्य ने कभी नहीं देखा। उसने उसे प्रकट किया है।

मैं आश्चर्यचकित हूँ। मैंने शाम के स्कूल में अंग्रेजी बाइबल, जॉन के सुसमाचार, रोमनों और इब्रानियों से बार-बार पढ़ाया। और जैसे ही मैंने एक ही बात को कहने के उन तीन अलग-अलग तरीकों को साझा किया, मैं पवित्र शास्त्र की एकता पर आश्चर्यचकित हो गया।

यूहन्ना, पौलुस और इब्रानियों के लेखक की शब्दावली, छवियाँ और खुद को व्यक्त करने के तरीके बहुत अलग हैं। लेकिन यही सच्चाई यूहन्ना 1:18, कुलुस्सियों 1:15 और इब्रानियों 1:3 में दी गई है। वास्तव में, यह दो बार दी गई है। पहली छवि सूर्य से निकलने वाली किरण है जो सूर्य को प्रकट करती है।

फिर भी, परमेश्वर का पुत्र नए नियम के रहस्योद्घाटन का मध्यस्थ है, जो पुराने नियम के रहस्योद्घाटन को लाने वाले स्वर्गदूतों और भविष्यद्वक्ताओं से कहीं अधिक श्रेष्ठ है। अन्य छवियाँ सिक्कों के निर्माण की हैं। सूर्य प्राचीन दुनिया में परमेश्वर की प्रकृति की सटीक छाप है।

पहली सदी के समय में, एक लचीली धातु को एक डाई में डाला जाता था और हथौड़े जैसी किसी चीज़ से पीटा जाता था, और उस पर वह छवि अंकित हो जाती थी। वही तीन चीज़ें प्रकट होती हैं। दीनार का सिक्का दीनार के डाई की छवि को प्रकट करता है।

समानता है, और इसलिए, पिता, पुत्र, पिता के बराबर है। ओह, लेकिन एक अंतर है। आप नहीं हैं, आप अपने हाथ में पासा नहीं पकड़ते हैं।

आप पासे से निकले सिक्के को पकड़ते हैं। लेकिन मुख्य विचार, एक बार फिर, संदर्भ में यह है कि आपको सांचों से दीनारियाँ मिलती हैं। यानी, सूर्य ईश्वर का प्रकटकर्ता है।

हे भगवान, अवतार कैसे सच्चे और जीवित परमेश्वर के प्रेम, धार्मिकता, बुद्धि, दया, भलाई और न्याय को प्रकट करता है। इस व्याख्यान में हमारा अंतिम पाठ इब्रानियों 2, 14 और 15 है। पिता की महिमा की चमक के रूप में, उनके दिव्य स्वभाव की सटीक छाप के रूप में।

वैसे, उस शब्द का मतलब है स्वभाव। इसमें कभी नहीं कहा गया है कि यीशु में स्वभाव है, हाँ, ऐसा है। हाँ।

धर्मत्याग शब्द का अर्थ है आवश्यक स्वभाव, सार, स्वभाव, अस्तित्व। यह आम बात नहीं है, लेकिन यह मौजूद है। पुत्र परमेश्वर के आवश्यक स्वभाव की सटीक छाप है।

ऐसा किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में नहीं कहा जा सकता जो ईश्वर नहीं है। दूसरे शब्दों में, यह पुत्र द्वारा अपने ईश्वरत्व की पुष्टि करने के बारे में कहा गया है। यह कोई संयोग नहीं है कि अवतार को दर्शाने वाले ये अध्याय ईश्वर को प्रकट करते हैं, यूहन्ना 1, कुलुस्सियों 1, और इब्रानियों 1 भी मसीह के ईश्वरत्व और उसकी मानवता को दर्शाते हैं, जो कि हमारी तत्काल चिंता का विषय नहीं है।

इब्रानियों 2:14, 15. चूँकि बच्चे, इसलिए, यह पिछली आयत से एक उद्धरण है, मुझे ऐसा लगता है कि इसका मतलब कुछ ऐसा है जैसे परमेश्वर के लोग या यहाँ तक कि चुने हुए लोग। लेकिन वैसे भी, चूँकि बच्चे मांस और खून में हिस्सा लेते हैं, इसलिए वह खुद, जो बेटा है, उसी तरह से उन्हीं चीज़ों में से एक है ताकि मृत्यु के माध्यम से वह उस व्यक्ति को नष्ट कर सके जिसके पास मृत्यु की शक्ति है, यानी शैतान, और उन सभी को छुड़ाए जो मृत्यु के भय से आजीवन दासता के अधीन थे।

यीशु ने अपने लोगों को बचाने के लिए उनके स्वभाव में हिस्सा लिया। ग्रीक में खून और मांस का मतलब है, जिसका आप अंग्रेजी में अनुवाद नहीं कर सकते क्योंकि हम उस तरह से बात नहीं करते। आपको रिसेप्टर भाषा में कुछ ऐसा डालना चाहिए जिसे रिसीवर ग्रहण करें और समझें।

इसलिए चूँकि बच्चे मांस और खून में भागीदार हैं, इसलिए उसने भी उन्हीं चीज़ों में हिस्सा लिया। यह अवतार का एक सशक्त कथन है। परमेश्वर का शाश्वत पुत्र, जो परमेश्वर था और मनुष्य नहीं था, नासरत के यीशु में मनुष्य बन गया।

उसने मांस और लहू का हिस्सा लिया। क्यों? ताकि मृत्यु के द्वारा वह उस व्यक्ति को नष्ट कर सके जिसके पास मृत्यु की शक्ति है, अर्थात् शैतान। मसीह मनुष्य बन गया, जो यहाँ स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, ताकि वह मर जाए।

अरे हाँ, उनके कई उद्देश्य थे। उन्होंने सिखाया। वह हमारे लिए उदाहरण हैं।

उसने चमत्कार किए। उसने बीमारों को चंगा किया और दुष्टात्माओं को निकाला। ये सब उसके काम का हिस्सा हैं।

लेकिन उनके काम का सार उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान है। उन्होंने मांस और रक्त का हिस्सा लिया ताकि मृत्यु के माध्यम से वे दो काम कर सकें। पहला, शैतान को नष्ट करना।

दूसरा, अपने लोगों को छुड़ाना। ताकि मृत्यु के द्वारा वह उस व्यक्ति को नष्ट कर सके जिसके पास मृत्यु की शक्ति है, अर्थात् शैतान। मसीह का कार्य सबसे अधिक परमेश्वर को प्रभावित करता है।

यह परमेश्वर को प्रसन्न करता है। यह परमेश्वर को हमारे साथ और हमें परमेश्वर के साथ मिलाता है। मसीह की मृत्यु हम, उसके लोगों के प्रति निर्देशित है।

यह हमें मुक्ति दिलाता है। यह हमें मेल-मिलाप कराता है। यह हमें मुक्ति दिलाता है।

यह हमें, व्यक्तिगत रूप से और सच्चे चर्च के रूप में, उन सभी को शुद्ध करता है जो वास्तव में विश्वास करते हैं। मसीह की मृत्यु केवल परमेश्वर और चर्च में विश्वासियों के प्रति ही निर्देशित नहीं है; मसीह की मृत्यु हमारे शत्रुओं के प्रति भी निर्देशित है। और यह हमारे सभी शत्रुओं, संसार, शरीर, शैतान, मृत्यु, नरक, सभी को परास्त करता है।

यह हमारे सभी शत्रुओं को परास्त करता है। यहाँ, मृत्यु के माध्यम से, परमेश्वर का पुत्र शैतान को नष्ट करता है। अर्थात्, परमेश्वर के पुत्र का अवतार विशेष रहस्योद्घाटन है।

यहाँ, यह परमेश्वर की महान शक्ति को दर्शाता है, जो दो काम करता है। मांस और लहू लेना, परमेश्वर के पुत्र का अवतार, दुष्ट को परास्त करता है। सिद्धांत रूप में, क्रूस पर, पूर्ण पूर्ति में, दूसरे आगमन के बाद, जब उसे आग की झील में डाला जाता है, प्रकाशितवाक्य 20:10, हमेशा-हमेशा के लिए।

दूसरी बात जो मसीह का कार्य करता है, वह है उन सभी को मुक्ति दिलाना, इब्रानियों 2:15, जो मृत्यु के भय से आजीवन दासता के अधीन थे। क्या विश्वासियों के लिए मृत्यु से डरना गलत है? हाँ और नहीं। निश्चित रूप से, हम नहीं डरते, हम अपनी नश्वरता के बारे में बेचैन हो सकते हैं।

कौन अपने परिवार, दोस्तों और चर्च को छोड़ना चाहता है? मैं नहीं चाहता। मैं इस विचार पर ध्यान नहीं देता। लेकिन भगवान हमें मौत की सजा के डर से बचाता है।

1 यूहन्ना 4. भय का अर्थ दण्ड है, और मसीह के सिद्ध प्रेम ने दण्ड के उस भय को दूर कर दिया है। परमेश्वर की कृपा से, विश्वासियों को परमेश्वर के क्रोध से डरने की आवश्यकता नहीं है।

यह आश्चर्यजनक है। नरक से डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। क्यों? क्योंकि परमेश्वर का पुत्र मरने के लिए आया था, और उसकी मृत्यु शैतान को हरा देती है और उसके लोगों को हमेशा के लिए मुक्ति दिलाती है।

न केवल न्याय से बल्कि उस न्याय के भय से भी जो उनके जीवन में अक्षमता लाता है। इस प्रकार, यूहन्ना और पौलुस में और अब इब्रानियों में, मैं इसे इब्रानियों के इस अंश में फिर से कहूँगा। यह अवतार में प्रकट परमेश्वर की शक्ति को दर्शाता है।

हमसे ज़्यादा शक्तिशाली दुश्मन शैतान को बचाने की शक्ति। परमेश्वर के लोगों को नरक से और उनके पूरे जीवन नरक के डर से बचाने की शक्ति। यह वाकई बहुत बड़ी शक्ति है।

यह परमेश्वर के पुत्र की मृत्यु और पुनरुत्थान में प्रकट होता है जिसने हमसे प्रेम किया और हमारे लिए खुद को दे दिया। इस प्रकार, हम पुराने नियम में पाए गए विशेष रहस्योद्घाटन के हर साधन को देखते हैं, सिवाय नए नियम में पुनरुत्पादित उरीम और तुम्मीम के। ओह, उनमें से कुछ निश्चित रूप से उतने अधिक नहीं हैं।

फिर हम विशेष रहस्योद्घाटन देखते हैं, खासकर परमेश्वर के पुत्र के अवतार में, लेकिन सबसे खास तौर पर हमारे व्याख्यानों के बाकी विषयों में। और यही व्याख्यानों का विषय है, पवित्र शास्त्र। और उस महान विषय के बारे में, हम अपने अगले व्याख्यान में आएंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा प्रकाशितवाक्य और पवित्र शास्त्र पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र संख्या 13 है, नए नियम में विशेष प्रकाशितवाक्य, अवतार, पॉल, परिचय, प्रेम, धार्मिकता, बुद्धि, इब्रानियों, प्रकटकर्ता, शक्ति।